

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९९

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ९ वा ❖ मे २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● सामायिक को समाज धर्म बनाइए	१५	● कडवे प्रवचन ८१
● जीवन जीने की सही कला है अर्हम् साधना - अर्हम् विज्जा	२१	● हास्य जागृती ८२
● कव्हर तपशील	२५	● करिअर निवडताना या चुका टाळा ८३
● ओशवंश का उत्पत्ति स्थान - श्री ओसियाँ तीर्थ	३१	● यही है जिंदगी : भक्ति की शक्ति ८४
● जागृत विचार	३३	● नफरत V/S प्यार ८५
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : इन्द्रिय दमन	३४	● राज मसाले, सुवर्ण महोत्सव - पुणे ९१
● "सरहद"चे शांतीदूत - श्री. संजयजी नहार	४३	● सुर्यदत्त सुर्यभारत ग्रुप ऑफ इंडिस्ट्रीज ९२
● Password - पासवर्ड	५०	● जीतो पुणे - सेवा गौरव पुरस्कार ९३
● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन	५१	● भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक
● बुद्धिमान अभयकुमार	६३	* महावीर गाथा ९५
प्रकरण २ - महाराजांशी बुद्धिची स्पर्धा	६८	* शोभा यात्रा ९५
● वैराग्यवाणी	७१	* तीर्थंकर भगवान महावीर विशेषांक ९६
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : घिर मत	७४	* अहिंसा टु व्हिलर रॅली ९७
● जीवन बोध : मृत्यु का स्मरण	७९	* जिन शासन सेवा प्रतिष्ठान ९७
● 28 May - Hunger day	७९	* संचेती ट्रस्ट ९९
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	८०	* सांस्कृतिक कार्यक्रम ९९
		* विद्यादान प्रतिष्ठान ९९
		* पिंपरी-चिंचवड महासंघ १००

* गुगळे परिवार - चौक सजावट, नगर	१००	● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	१०३
* जन्म महोत्सव - अहमदनगर	१०१	● नामको हॉस्पिटल - नाशिक	१०४
● श्री. बालचंद्रजी मालू - दीक्षा	१०२	● श्री. दिलीपजी मेहता - अध्यक्षपदी	१०४
● आनंदधाम, अहमदनगर - बालशिबीर	१०२	● अर्हम् विज्जा, पुणे - ऑफिस उद्घाटन	१०५
● जैन जागृति - हार्दिक अभिनंदन	१०३	● डॉ. आशिष गांधी - औरंगाबाद	१०५
● परिचय संमेलन, पुणे	१०३	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

## जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००



या अंकाची किंमत ५० रुपये.

Google Pay - Mob. : 9822086997

## सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay - M. 9822086997/  
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

**BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI**

**Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.**

**Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

## सामायिक को समाज-धर्म बनाइए

लेखक : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

स्व-स्वरूप में रमण करने वाले सिद्ध भगवन्त, अनन्त ज्ञानी अरिहन्त भगवन्त तथा तप-संयम की साधना में आत्मा को भावित करने वाले संत-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !  
बन्धुओं !

तीर्थकर भगवान महावीर की वाणी में अभी उदय को बदलने के बजाय अन्तर को बदलने की बात कही गई है। अन्तर सुनने मात्र से नहीं बदलता। अक्षर का ज्ञान दिया जा सकता है, शिक्षा दी जा सकती है, सभ्यता सिखाई जा सकती है पर अन्तर की अनुभूति, अन्तर के ज्ञान से होती है। निमित्त से भी होती है, पर वह भी होगी अन्तर से। जिसका अन्तर जग गया, उसको बाहर का निमित्त मिले या नहीं, फर्क नहीं पड़ता। ऐसे भी अनन्त साधक हैं जो स्वयंबुद्ध हुए हैं। उन्हें बोध देने के लिए बाहर के किसी निमित्त की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनके लिए बाहर के निमित्त का कथन किया जाता है वे स्वयंबुद्ध नहीं हैं। किसी को चूड़ी से वैराग्य आ गया। क्या चूड़ी ने ज्ञान दिया? बैल को देखकर वैराग्य आ गया। बैल तो कुछ बोलता नहीं। समुद्रपाल को चोर की सजा देखकर वैराग्य हो गया। चोर को देखकर आप में से किसी को वैराग्य हुआ है? क्या आपने किसी चोर को कभी नहीं देखा है? आपने चोर को कई बार देखा है परन्तु वैराग्य नहीं आया। क्यों नहीं आया? क्या चोर को देखना वैराग्य का कारण है? किसी को इन्द्र की ध्वजा देखकर वैराग्य आ गया।

आप अन्तर में सोचने के लिए कब बैठे? हम कब अन्तर का निरीक्षण करते हैं? भगवान की भाषा में कहूँ- हर साधक के लिए वर्णन है कि वह पहले प्रहर में स्वाध्याय करे, दूसरे प्रहर में ध्यान करे। ध्यान क्या है?

जो कुछ मैंने ज्ञान सीखा है, सुना है, ग्रहण किया है उसका मेरे जीवन में क्या प्रभाव पड़ा? स्वयं का स्वयं के द्वारा निरीक्षण क्या है? भगवान की भाषा में कहूँ - भगवान ने स्वाध्याय का अर्थ किया है अपने-आपका अध्ययन, स्वयं द्वारा स्वयं का निरीक्षण स्वाध्याय है। अपने द्वारा, अपने-आपका, अपने-आप में अपना निरीक्षण करना स्वाध्याय है।

आप सबसे पहले मुझे इस बात का जवाब दो कि चौबीस घंटे में से आप अपने-आपके लिए कितना समय दे रहे हैं? कब समय देते हैं? क्या कभी किसी ने सोचा है कि मैंने अमुक व्रत लिया तो क्या उसकी बराबर पालना हो रही है या नहीं? व्रत नहीं लिया तो चिन्तन करो कि मैं कौन-कौन से व्रत ले सकता हूँ? जो व्रत मैं ले सकता हूँ, मैंने वे व्रत क्यों नहीं लिए? क्या आपका इन प्रश्नों पर कभी विचार गया है?

देवता दीक्षा नहीं ले सकते। दीक्षा तो क्या, कोई व्रत-प्रत्याख्यान तक नहीं कर सकते। नरक के जीवों के लिए कह दिया कि वे भी दीक्षा नहीं ले सकते। तिर्यच के लिए कह दिया कि वे श्रावक तो बन सकते हैं किन्तु दीक्षा नहीं ले सकते। भगवान ने मनुष्यों के लिए क्या कहा? अन्तगडदसासूत्र का आठ दिन ही नहीं, आठ महिने भी हम व्याख्यान सुना दें, परन्तु खुद का चिन्तन नहीं किया तो किसी की न दीक्षा हुई है, न होगी ही। आप पिता को देखते हैं, माता को देखते हैं, पत्नी और पुत्र को देखते हैं, आपके पास सबको देखने का समय है किन्तु अपने-आपको देखने के लिए समय नहीं। जब अपने-आपको देखने का समय नहीं तो दीक्षा कैसे हो?

सुनता हूँ- स्वाध्याय करते-करते कोई वैरागी हो

गया। पूज्य श्री धन्नाजी महाराज की बात कह सकता हूँ। उन्हें गुरु मिला नहीं, उन्होंने खुद गुरु की खोज की। आप स्वाध्याय करते हैं या नहीं? स्वाध्याय का मतलब दशवैकालिक या पुच्छिस्सुणं का पाठ कर लेना ही नहीं है, बल्कि शास्त्रों में जो गाथाएँ हैं उनका अर्थ अपने-आप पर कहाँ तक जमा है, देखना है। स्वाध्याय कब चालू करेंगे? आप अपने आपको जानें, समझें, देखें। आठ साल का बच्चा तेला कर सकता है पर तीस साल के बच्चे का बाप उपवास तक नहीं कर सकता। क्यों? क्या आपके मन में तपस्या करने की भावना आती है? क्या कभी यह भी सोचा है कि मेरा लड़का कर रहा है तो मुझे क्यों नहीं करना चाहिए? बेटा कर सकता है तो बाप क्यों नहीं कर सकता? बात यह है कि आपका उस तरफ चिन्तन चला ही नहीं।

मुझे पैंतीस वर्ष के भाई को समकित देने का मौका आया। समकित देकर मैंने कहा- हम रुपया, नारियल तो लेते नहीं, अतः गुरु दक्षिणा में मैंने साल भर में दो उपवास करने की बात कही तो वह भाई बोला- बाबजी! आज तक मैंने कभी उपवास किया ही नहीं। मैंने पूछा- भाई! क्यों उपवास नहीं किया? उसका जवाब था- मैंने कभी व्याख्यान ही नहीं सुना। क्या उसने घर में किसी को उपवास करते नहीं देखा? क्या कभी पर्युषण में लोगों को तप करते नहीं देखा? उसने सैंकड़ों-हजारों को तप करते देखा है। तपस्या करने वालों को धन्यवाद भी बोला है, पर खुद के करने की मन में नहीं आई। क्यों? क्योंकि उस तरफ उसका चिन्तन चला ही नहीं। जब तक सुनी-समझी बात अन्तर्मन तक नहीं जाती, तब तक व्रत करने की भावना नहीं जगती और व्रत-प्रत्याख्यान के प्रति लगाव भी नहीं बनता।

हम मुम्बई से अहमदाबाद आ रहे थे। बीच में एक गाँव में ठहरना पड़ा। गाँव का नाम था- बोर्डी। संत वहाँ गोचरी गए। वहाँ सुनने को मिला- इस घर में तेरहजनों

ने दीक्षाएँ ली हैं। घर के सभी सदस्य दीक्षित हो गए। मैं पूछूँ- आपके घर से किसी की दीक्षा हुई? आपके घर से किसी की दीक्षा हो क्या यह बात मन में क्यों नहीं आई? निमित्त मिलता है पर निमित्त के साथ जब तक अर्न्तहृदय नहीं जगेगा, तब तक व्रत लेने की बात मन में नहीं आएगी। किसी को सारक्षता का ज्ञान दिया जा सकता है। शिक्षा दी जा सकती है, ली जा सकती है। परन्तु अन्तर का ज्ञान, अन्तर से ही आता है। अन्तर का ज्ञान न दिया जा सकता है और न ही लिया जा सकता है। हाँ, निमित्त कोई भी बन सकता है।

गुजरात की बात कहूँ। घर में तप के पारणे का दिन था। पारणा करते-करते डोकरा गुड़ गया (वृद्ध का देहावसान हो गया)। आवाज आई- डोकरा गुड़िगय्या छे। तमारे पण जावानुं छे (अन्तर में आवाज आई वृद्ध तो चला गया, परन्तु एक दिन तुम्हें भी जाना है।)

डोकरे की श्मशान यात्रा में चलते-चलते ग्यारह वैरागी हो गए। एक ही परिवार के ग्यारह सदस्य वैरागी तो बने ही, दीक्षित भी हो गये। मैं मात्र दीक्षा की बात नहीं कह रहा हूँ। मुझे आपसे यह कहना है कि यहाँ कौनसा व्यक्ति है जो अपने लिए एक घंटा निकाल कर सामायिक नहीं कर सकता, प्रतिक्रमण नहीं कर सकता, अपनी आलोचना नहीं कर सकता? कर सकते हैं, पर कब? जब आप समय निकालें। मैं कई बार जैनों के बच्चों में ईसाईयों और मुसलमानों की बात उदाहरण के रूप में कहता हूँ। रिक्शा चलाने वाला रिक्शा छोड़कर नमाज पढ़ता है। आप रिक्शे में बैठे हैं उस समय बैठे-बैठे नमस्कार मंत्र तक नहीं जपते। मुसलमान चाहे राष्ट्रपति है तब भी नमाज पढ़ता है। आप में से कौन है जो अपने घर के सदस्यों से कहता है कि दूसरे काम बाद में, पहले सामायिक करो। सामायिक करके अन्न-जल लेना, ऐसा कहने वाले हैं या नहीं? आपने सब कामों के लिए प्रयास किया, किन्तु अपनी आत्मा के लिए क्या चिन्तन किया है? अगर चिन्तन करते तो खुद

सामायिक करने की कहते।

आज बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजना याद रहता है। बच्चे कभी स्कूल जाने में आना-कानी करे तो उन्हें टॉफी देकर भेजते हैं। ओसवाल समाज में कभी नियम था कि जब तक घर वाले नवकार मंत्र नहीं जप लेते तब तक अन्न-जल नहीं दिया जाता। आपकी दुकान पर मुनीम रहता है। मुनीम काम पर आ गया, क्या उससे पूछा जाता है कि तुम सामायिक करके आए हो? क्या आप सामायिक नहीं करके आने वाले मुनीम को कभी कहते हैं कि- “जा, पहले सामायिक कर, फिर काम पर लग।” आप इतने लोग बैठें हैं उनमें से कौन हैं जो अपने घर वालों से कहते हैं - “पहले नवकार मंत्र जपें या सामायिक करें।” आप अपने छोटे-से बच्चे को, यदि उसने अण्डरविथर नहीं पहनी है तो कहकर पहनाते हैं। कपड़े पहनाना याद है पर कितने हैं जो नवकार जपने की याद दिलाते हैं? आज कभी बच्चा सामायिक करता है तो घर वाले पूछते हैं क्या तुम्हें महाराज बनना है?

आप चिन्तन करें। बच्चों के खाने-पीने का आप विचार करते हैं, घर में कोई बीमार है तो उसके उपचार की सोचते हैं। शिक्षा, चिकित्सा, घर की साफ-सफाई, काम-धंधे सबके लिए आपका चिन्तन है परन्तु अपने-आपका कितना चिन्तन है? आप यदि बच्चों को संस्कारित करने का चिन्तन करें तो वह दिन दूर नहीं जब घर-घर में वैरागी बन सकेंगे। संगति और संस्कार से जीवन प्रशस्त होने का मार्ग खुलता है। धार्मिकजनों को चाहिए कि वे सबसे पहले यह नियम करें कि घर का हर सदस्य बिस्तर से उठते और सोते समय कम से कम नमस्कार महामंत्र तो जपेगा ही। कुछ लोग जपते हैं। कुछ शायद हैं जो चौदह नियम चितारते भी हैं। तीन मनोरथ का चिन्तन करने वाले भी हैं। जो करते हैं, अच्छी बात है। पाँच मिनट यह भी विचार करें कि मैं धर्म में कौनसी आराधना कर सकता हूँ और जो कर

सकता हूँ वह हुई है या नहीं? कभी घर का सदस्य भोजन नहीं करे तो बार-बार पूछते हैं। कभी कोई दुकान नहीं जाए तो बार-बार पूछते हैं, पर सामायिक हुई या नहीं, इसकी पूछ कौन करता है? शायद महाराज के अलावा कोई पूछने वाला नहीं है।

जगिए ! कुछ समाज धर्म बनाइये। जैसे मुसलमानों में नमाज पढ़ना समाज-धर्म है, सिक्खों में पाँच क-कार, समाज-धर्म है, दिगम्बरों में रात में नहीं खाना समाज-धर्म है वैसे ही आपका समाज-धर्म क्या है? संस्कार-निर्माण के लिए अपने-आपको तैयार कीजिए। अपने विकास के लिए धर्म और संघ की दीप्ति के लिए, बच्चे बच्चियों में संस्कार सृजित करने के लिए कोई समाज-धर्म होना चाहिए। स्थानकवासी समाज का बच्चा कम से कम उठने के साथ नमस्कार मंत्र गिनेगा अगर इतना-सा समाज-धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है तो धीरे-धीरे आप सामायिक, प्रतिक्रमण और साधना भी समाज-धर्म के रूप में करने लगेगे। जगिए, घर परिवार के लोगों को जगाइए, संघ-समाज में ब्रत-नियम की लहर पैदा कीजिए तो आपका प्रवचन सुनना सार्थक होगा।

**संदर्भ-**

१. कर्लिंग देश की राजधानी चंपापुरी में महाराज दधिवाहन अपनी महारानी पद्मावती के साथ सुखपूर्वक राज्य करते थे। महारानी पद्मावती वैशाली गणराज्य के महापराक्रमी राजा चेटक की सात पुत्रियों में सबसे बड़ी थी। उनके एक पुत्र था- करकंडू। रानी जब गर्भवती थी तब वह किसी कारण से राजा से बिछुड़ गई। एक दिन साध्वीजी के उपदेश से रानी को वैराग्य हो गया और वह साध्वीजी से दीक्षित हो गई। दीक्षा के बाद जब गर्भ के लक्षण दिखने लगे तो उसने साध्वीजी से क्षमा माँगी और कहा कि यदि मैं गर्भ की बात बता देती तो आप मुझे दीक्षा नहीं देती। साध्वीजी ने गुप्त रूप से प्रसव का प्रबंध किया। शिशु के जन्म होने पर उसका

नाम रखा - करकंडू ।

कंचनपुर का राजा निःसंतान था। वह मर गया। मंत्रियों की सलाह पर नये राजा का चुनाव करने के लिए यह तय किया गया कि राजा की हस्तिनी जिसको पुष्प माला पहनायेगी, उसका राज्याभिषेक कर दिया जायेगा। करकंडू उसी नगर में वृक्ष के नीचे सोया हुआ था। हस्तिनी ने उसका जलाभिषेक कर पुष्प माला करकंडू के गले में डाल दी। करकंडू को हाथी पर बैठा कर नगर में ले गये और उत्सवपूर्वक उसका राज्याभिषेक कर दिया। करकंडू ने अपने पिता को कभी नहीं देखा था।

कुछ बातों को लेकर चंपा के महाराज दधिवाहन और कंचनपुर के महाराज करकंडू के बीच लड़ाई छिड़ गई। उस समय साध्वी पद्मावती कंचनपुर में थी। पिता-पुत्र के बीच युद्ध का समाचार सुनकर वह सेनाओं के बीच में आ खड़ी हुई और पिता-पुत्र को समझाया और महाराज दधिवाहन को बताया कि करकंडू उन्हीं का पुत्र है। करकंडू पिता के चरणों में झुक गया और महाराज दधिवाहन ने उसे योग्य समझ चंपा का सिंहासन सौंप दिया और स्वयं दीक्षित हो गये।

करकंडू दोनों राज्यों की व्यवस्था देखता था। उसे गौवंश बहुत प्रिय था। एक बार उसकी नजर एक दूध जैसे धवल बछड़े पर पड़ी। उसको उससे स्वभावगत राग हो गया और गौशाला के व्यवस्थापक को बुलाकर कहा कि इस बछड़े का विशेष ध्यान रखना।

करकंडू राज्य व्यवस्था में इतना व्यस्त हो गया कि कई वर्षों तक अपने प्रीतिपाल बछड़े को नहीं देख सका। एक दिन उसने सोचा कि वह बछड़ा तो अब काफी बड़ा और सुन्दर हो गया होगा। इन्हीं विचारों के साथ वह एक दिन गौशाला का निरीक्षण करने पहुँच गया। वहाँ उसने अपनी कल्पना के सुन्दर बछड़े को न पाकर गौपालक को उपालम्भ दिया। उसे अपने सामने लाने को कहा। गौपालक एक कृशकाय बैल को लेकर

राजा के सम्मुख आ गया। राजा ने गौपालक को डाँटते हुए कहा- तुमने मेरे बछड़े का ध्यान नहीं रखा, इसलिए इसकी यह हालत हो गई दिखती है। गौपालक ने कहा- राजन् ! उम्र के हिसाब से यह बैल अब बूढ़ा हो गया है, इसलिए इसकी यह हालत है।

‘बूढ़ा’ यह शब्द सुनते ही राजा का चिंतन शुरु हुआ- क्या मेरा बल, वैभव, सुन्दरता भी ऐसे ही नष्ट हो जाएगी? यदि हाँ, तो इस नश्वर काया का मोह क्यों करना? इसी तरह से ये राज्य सम्पत्तियाँ, रानियाँ और अन्तःपुर सभी नष्ट होने वाले हैं। जो अपना है वह नष्ट नहीं होता और जो नष्ट होता है वह अपना नहीं, तब उस पर मोह क्यों? चिंतन करते-करते राजा के चरण वैराग्य की ओर बढ़ गये। वह सब कुछ त्याग कर पिता का मार्ग अपना कर दीक्षित हो गया। शुद्ध संयम पाल कर केवलज्ञान प्राप्त किया। वे प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुए।

२. उत्तराध्ययन सूत्र के इक्कीसवें अध्ययन में समुद्रपाल के कथानक का वर्णन आया है। समुद्रपाल भगवान महावीर के तत्त्वज्ञ श्रावक पालित का बेटा था। समुद्र में जन्म होने के कारण उसका नाम समुद्रपाल रखा गया। पिता ने उसका विवाह एक सुन्दर कन्या के साथ कर दिया। वह देवतुल्य कामभोगों का उपभोग करते हुए आनन्द से रहने लगा। एक दिन समुद्रपाल अपने महल के गवाक्ष में नगर की शोभा देख रहा था, तभी उसने राजमार्ग पर मृत्युदण्ड प्राप्त एक चोर को देखा जिसे राजपुरुष वध्यभूमि की ओर ले जा रहे थे। उसे लाल कपड़े पहनाए हुए थे और उसके दुष्कर्म की घोषणाएँ की जा रही थी। समुद्रपाल ने तुरन्त समझ लिया कि इसे इसके दुष्कर्मों की सजा मिल रही है। उसका चिन्तन आगे बढ़ा और सोचा कि मैं भी विषयभोगों में पड़कर अधिकाधिक कर्मबंधन में फँस रहा हूँ। इनका फल मुझे भी मिलेगा ही। उसका मन कर्मबंधनों को काटने के लिए तिलमिला उठा। उसने सोचा कर्म काटने का एकमात्र मार्ग है श्रमण धर्म का पालन। उसका मन संवेग

और वैराग्य से भर गया। उसने माता-पिता से अनुमति लेकर अनगार धर्म की दीक्षा ले ली।

३. पांचाल देश की राजधानी काम्पिल्यपुर में जयवर्मा राजा का शासन था। राज्य में एक बार चित्रशाला बनाने के लिए नींव की खुदाई में एक रत्नजड़ित अत्यन्त मनमोहन मुकुट मिला। राजा ने उसे सिर पर धारण किया तो मुकुट के प्रभाव से राजा के दो मुख दिखने लगे, अतः जयवर्मा प्रजा में द्विमुखराज के नाम से प्रसिद्ध हो गये। उनके एक पुत्री मदनमंजरी थी जिसका विवाह अवंतीपति चण्डप्रद्योत के साथ हुआ। तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार इस पर इन्द्र महोत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें रंगीन वस्त्रों, मणि-माणिक्य, रत्नों एवं पुष्पमालाओं से सजाकर इन्द्रध्वजों को स्थापित किया गया।

आठ दिन तक उस इन्द्रध्वजा का रोज पूजन होता रहा। आठवें दिन की समाप्ति पर लोग उस इन्द्रध्वजा के ऊपर के वस्त्र, रत्न और आभूषण उतार कर ले गये और अब वह एक टूँठ के रूप में ही खड़ी थी। उसी दिन राजा वहाँ से निकले उन्होंने देखा कि वहाँ केवल टूँठ है और उससे भी शरारती बालक खेल रहे हैं। इन्द्रध्वज की ऐसी दुर्दशा देखकर राजा ने सोचा- अहो ! एक दिन ये इन्द्र ध्वज जो सारी प्रजा का प्रीतिपाल थी, लोग उसे पूजते थे, आज उसकी यह दशा हो गई है, कैसी विडम्बना है? चिंतन करते-करते राजा के मन में आया- आज जो प्रजा मुझे इतना प्यार और आदर देती है, वही प्रजा एक दिन मेरी उपेक्षा भी कर सकती है। ये धन-सम्पत्ति, ये राज्य वैभव भी इसी तरह से चले जायेंगे। ये सब मुझे छोड़ें, उसके पहले ही मैं क्यों नहीं इन्हें छोड़ दूँ? आसक्ति का त्याग कर क्यों नहीं शाश्वत सुख देने वाली मोक्ष लक्ष्मी का वरण करूँ? विचार करते-करते राजा स्वयं दीक्षित हो गये। शुद्ध संयम का पालन कर केवलज्ञान प्राप्त किया और सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए। ये द्विमुख या दुर्मुख राजा प्रत्येक बुद्ध थे। ●

## जीवदया व गौपालन के लिए



### श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान

उज्ज्वल गौपालन संस्था

नवकार तीर्थ, लोणीकंद की यह गोशाला आप सभी दानवीर के सहयोग से गोवंश का अभय दान बन गयी हैं। आपके परिवार की हर खुशी में एंव विभिन्न प्रसंग पर रु. १००१/- देकर एक गोवंश को अभय दान दे। या रु. ५१००१/- देकर २१ साल की गोशाला की मिति लेकर जीवदया के इस महायज्ञ में सहयोग देकर मनःशांती पाईए।

नवकार तीर्थ, पुणे - नगर रोड, लोणीकंद, जि. पुणे.

फोन : २७०६९६९०, ९८२२९५७७८८

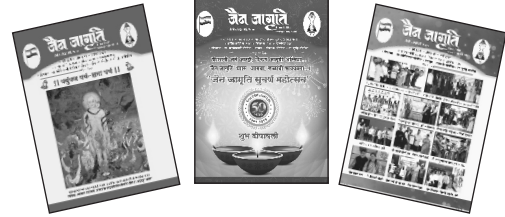
पुणे ऑफिस : दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी रोड,

पुणे ३७. फोन : ६५२५७७०५, मो.:९८५०७९४१६४

www.jainnavkartirth.goshala.org

संस्था को दिए गए दान पर आयकर कानून कलम ८० जी के अंतर्गत इन्कमटॅक्स की छूट मिलेगी

## WE ARE BRAND CREATORS ADVERTISE WITH US



## Jain Jagruti

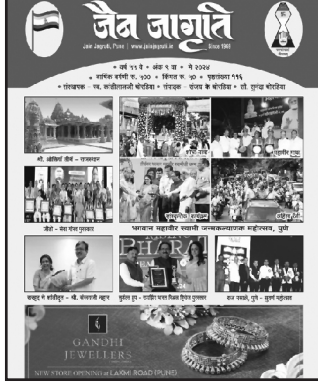
(Since 1969)

Mobile : 9822086997, 8262056480

E-mail : jainjagruti1969@gmail.com

Website : www.jainjagruti.in

## कच्छर तपशील - मे २०२४



### ❖ श्री ओसियाँ तीर्थ

राजस्थान येथील आशेवंशाचे उत्पत्ति स्थान श्री. ओसियाँ तीर्थचा लेख पान नं. ३१ वर दिला आहे.

### ❖ भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव, पुणे

\* **भव्य शोभा यात्रा** : श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती तर्फे चारी ही संप्रदायाच्या संयुक्त विद्यमानाने भव्य वर घोडा काढण्यात आला. श्री गोडीवाला पार्श्वनाथ जैन मंदिर येथे सुरुवात होऊन आदिनाथ जैन स्थानकात शोभायात्रेचा समारोप झाला. (बातमी पान नं. ९५)

\* **महावीर गाथा** : उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांनी १४ ते २१ एप्रिल या ८ दिवसांत महावीर गाथा प्रस्तुत केली. (बातमी पान नं. ९५)

\* **सांस्कृतिक कार्यक्रम** : जैन उत्सव समिती द्वारा २३ एप्रिल २०२४ रोजी जयजिनेंद्र प्रतिष्ठान येथे भव्य धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. श्री. शैलेशजी लोढा यांचे संबोधन, गरबा नृत्य, हजारों दिव्यांची महाआरती इ. कार्यक्रम झाले. (बातमी पान नं. ९९)

\* **टु व्हिलर रॅली** : जैन उत्सव समिती व आनंद दर्शन युवा मंच यांच्या वतीने अहिंसा टु व्हिलर

रॅलीचे आयोजन करण्यात आला. यात सुमारे २५०० टु व्हिलरने सहभाग घेतला.

(बातमी पान नं. ९७)

### ❖ जीतो, पुणे – सेवा गौरव पुरस्कार

जैन इंटरनॅशनल ट्रेड ऑर्गनायझेशन (जीतो) पुणे विभागाचा १८ वा वर्धापन दिन आणि सेवा गौरव पुरस्कार वितरण सोहळा २ एप्रिल २०२४ रोजी बिबवेवाडी येथील अण्णा भाऊ साठे सभागृहात आयोजित करण्यात आला होता. पुरस्कारांचे वितरण स्वामी श्री गोविंद देव गिरीजी यांच्या हस्ते झाले. (बातमी पान नं. ९३)

### ❖ श्री. संजयजी नहार, पुणे

जैन समाज गौरव व “सरहद”चे शांतीदूत श्री. संजयजी कांतिलालजी नहार यांचा जीवन परिचय लेख पान नं. ४३ वर दिला आहे.

### ❖ सुर्यदत्त सुर्यभारत ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

ट्रेड अॅण्ड मिडीया ग्रुप तर्फे पुणे येथील सुर्यदत्त सुर्यभारत ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज संस्थेला “रायझिंग भारत रिअल हिरोज २०२४” पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९२)

### ❖ राज मसाले, पुणे

पुणे व महाराष्ट्रात लोकप्रिय असणाऱ्या राज मसाले यांचा सुवर्ण महोत्सवी मेळावा ८ एप्रिल २०२४ रोजी पुणे शहरात साजरा करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९१)





जैन समाज गौरव

## ‘सरहद’चे शांतिदूत – संजयजी नहार

लेखिका – साईमिलन



### संजय – सौ. सुषमा नहार

भारताचा स्वर्ग जिथे फुलतो असा इतिहास सांगणाऱ्या आपल्या देशात काश्मीरचं स्थान हे शिखरावर आहे आणि हा स्वर्ग अनेक अंगानी बहरलेला आहे. मात्र, या स्वर्गावर काळी छाया पडली दहशतवादाची आणि त्या नंदनवनावर भीतीचे सावट पसरले. तरीही त्या नंदनवनाची, तेथील माणसांची, तेथील वसाहतींची आणि मुख्य म्हणजे देशाच्या या सर्वोच्च अनुभूतीची भूरूळ पडली ती पुण्याच्या संजय नहार यांना...! आता ३७० कलम काढले आणि काही अंशी येथील वातावरणात फरक पडला असला तरी ‘ते धगधगते’ दिवस विसरता येणे शक्य नाही. सतत दहशतीखाली जगणाऱ्या येथील जनतेला आणि कोवळ्या वयाच्या मुलांवर यामुळे झालेले परिणाम कधीही विसरता येणे शक्य नाही. कोणत्याही वयातील माता-भगिनींना येथे सुरक्षितता नव्हती, दहशतवादाचे काळे ढग सतत या भागात पसरलेले होते. भिंतींची चाळण करून गोळ्यांचे छर्ये आत घरात शिरायचे... अशा वातावरणात एक दिलाशाचा हात या परिसरात मिळाला... या नंदनवनातील काळ्या छायेतून येथील जनतेमध्ये, माता-भगिनींमध्ये सुरक्षिततेची भावना

निर्माण करणे, त्यांच्यात जीवन जगण्याची आस निर्माण करणे, दहशतवादाच्या भीतीतून मुक्त करून त्यांना माणसांत आणण्याच्या ध्येयाने एका माणसाला एक वेगळीच ऊर्जा दिली, त्यांचे नाव संजय नहार...! संजय नहार आणि काश्मीर हे एक समीकरणच तयार झाले. यातूनच निर्मिती झाली संजय नहार यांच्या ‘वंदेमातरम’ आणि ‘सरहद’ या संस्थांची. ‘सरहद’ देशाची सीमा... आणि ‘वंदेमातरम’ राष्ट्राभिमान. ! अत्यंत समर्पक असे नाव त्यांनी आपल्या कार्यासाठी शोधले; पण त्या ‘सरहद’ पलीकडे जाऊनही काम करण्याची तयारी त्यांनी ठेवली. संजय नहार हे नाव आज या ‘सरहद’चे ‘आयकॉन’ ठरले आहे.

पुण्याचे असलेले आणि पुण्यासाठी एक वैभव ठरलेले संजय कांतिलालजी नहार मूळचे अहमदनगर जिल्ह्यातील. त्यांचा जन्म पारनेर तालुक्यातील कान्हूरपठार येथे आजोळी झाला. प्राथमिक शिक्षण पुणे जिल्ह्यातील शिरूर तालुक्यात झाले. वडील कांतिलालजी पुण्यात मनपात मलेरिया इन्स्पेक्टर; घराला हातभार लावण्यासाठी आई कपडे विकण्याचे काम करायच्या; पण त्यातूनही संजयजींना समाजकार्याचा वारसा त्यांच्या घरातूनच मिळाला. पुढे चौथीनंतर संजयजी पुण्यात शिक्षणासाठी आले. राजा धनराज गिरजी हायस्कूल मध्ये आठवीसाठी प्रवेश घेतला. नाना पेठेतील छोट्या एका खोलीच्या घरात राहून शिक्षण सुरू झाले. असे असले तरी शिरूरला काका धनराज नहार यांचा कार्याचा पगडा मनावर घर करून राहिला होता. धनराजजी यांचे त्यावेळचे कार्य या परिसरात मोठे होते. यशवंतराव चव्हाणां पासून

अगदी शरद पवारां पर्यंत अनेक नेत्यांच्या ओळखी. अण्णा हजारे तर त्यांचे स्नेहीच. त्यांच्या कार्याचीही निव धनराजजी यांच्या सहकार्यानेच झालेली, या अशा वातावरणातून संजयजींचे जीवन घडत गेले आणि त्यातूनच त्यांच्या चळवळीचा जन्म झाला.

पुण्यातील नाना, भवानी या पूर्वीकडील पेठा धार्मिकदृष्ट्या अत्यंत संवेदनशील अशा होत्या, नव्हे काही प्रमाणात आजही आहेत. संजयजी नाना पेठेत राहायला आले; पण त्यांच्यातील चळवळी कार्यकर्ता त्यांना गप्प बसू देत नव्हता. वय लहान होते, तरीही समाजकार्याचे झालेले संस्कार त्यांच्यातील कार्यकर्त्याला काही वेगळीच जाणीव करून देत होता. नाना पेठेतील जातीय दंगली वातावरण अशांत करीत होत्या, आणि हे वारंवार होत होते आणि यातच हिंदू एकता आंदोलनाच्या नेत्याबरोबर त्यांची १९८० च्या दरम्यान जवळीक झाली. त्यातूनच धनंजय जगताप, विलास तुपे, बंडू शिंगरे त्यांच्याबरोबर जोडले गेले आणि एका नव्या दिशेने त्यांचा प्रवास सुरू झाला.

१९८४ - ८५ च्या दरम्यान पंजाब पेटला होता. यावेळी संजयजी महाविद्यालयीन विद्यार्थी होते. १९-२० वय तसे वेगळे; पण हेच वय त्यांच्या सकारात्मक कार्याची दिशा ठरले. घरातील संस्कार आणि समाजातील घडामोडी त्यांना गप्प बसू देत नव्हत्या. काही तरी समायोपयोगी विधायक सकारात्मक करण्याच्या ध्येयाने त्याच वेळी त्यांचे मन पेटून उठले होते. क्रांतिकारक भगतसिंग पंजाबचा वीर हसत हसत देशासाठी फासावर गेला. तो त्यांचा आदर्श होता. मात्र, याच पंजाबमध्ये अशांतता निर्माण करण्यात काही विघ्नसंतोषी लोक यशस्वी होत होते. याच दरम्यान पुण्यातल्या ज्ञानप्रबोधिनी संस्थेनं पंजाब शांती यात्रा काढली होती, त्यातही हे तरुण सहभागी झाले होते. त्याच काळात 'वंदे मातरम' ही संघटना २३ मार्च

- भगतसिंग, राजगुरू आणि सुखदेव यांच्या हुतात्मादिनी १९८४ ला या संस्थेची मुहूर्तमेढ रोवली गेली. पंजाबमधील दहशतग्रस्त भागात जाऊन हे कार्य करायचे ठरले; पण सगळ्या गोष्टी पैशांपाशी येऊन थांबतात, तोच अनुभव संजयजींना आला. मात्र, त्यावरही मात करून पैसे जमवून संजयजी त्यांच्या सहकाऱ्यांसह पंजाबला जालियनवाला बागेत गेले आणि 'वंदे मातरम'चे कार्य शांतता यात्रेने खऱ्या अर्थाने सुरू झाले.

१९८७ साली पंजाबमध्ये पूर आला. बचाव कार्यासाठी संजय नहार आणि त्यांचा मित्र परिवार तेथे जाण्यास सज्ज होताच. यावेळी दत्तात्रय गायकवाड या त्यांच्या तरुण सहकाऱ्याचे बलिदान संजय नहार यांच्या काळजावर आघात करून गेलं; पण म्हणून ते डगमगून गेले नाहीत. पंजाबच्या साह्याला कायमच त्यांचा हात पुढे आलेला असायचा. मित्रमंडळींच्या सहकार्याने तिथे जायचे आणि शांतता निर्मितीसाठी कार्य करायचे, या ध्येयाने त्यांना झपाटले होते. हळूहळू पंजाबमधील शासकीय अधिकारी, पत्रकार त्यांना ओळखू लागले. यामध्ये ज्येष्ठ शीख नेते जीवनसिंग उमरानांगल, मुंबईचे माजी पोलीस आयुक्त आणि पंजाबचे तत्कालीन महासंचालक जे. एफ. रिबेरो, के. पी. एस. गिल, वरिष्ठ पत्रकार आणि 'पंजाब केसरी' वृत्तसमुहाचे मालक विजयकुमार चोपडा, पोलीस अधिकारी एस. एस. विर्क, ते पुढे पंजाब आणि महाराष्ट्राचे पोलीस महासंचालक झाले, सामाजिक कार्यकर्ते जतिंदर पन्नु यांनी संजय नहार यांच्या कार्याची धडपड ओळखली होती. हिंसाचार, दंगल याची झळ आधी सामान्यांना पोहोचते, त्यामुळे हिंसाचारग्रस्त लोकांना आधार देणं, त्यांच्या संपर्कात राहणं आणि माणुसकीच्या नात्यानं त्यांना आपलसं करणं हे संजयजींचं कार्य आजही त्यांच्या कार्यातून दिसून येतं. यातून त्यांनी अनेक उपक्रम

राबवले, तेथील लोकांमध्ये पुन्हा जगण्याची आशा निर्माण करून कार्यकर्ते जोडण्याचेही काम त्यांनी केले.

पंजाबमध्ये शांतता निर्माण करित असताना संजयजींची ओळख 'शांतिदूत' म्हणून होऊ लागली होती. मात्र त्याचवेळी पंजाबमध्ये एकदा सुवर्णमंदिरात गेले असताना काही अतिरेकी त्यांना शोधत येत होते. हातात बंदूका आणि तलवारी होत्या. संजय नहार यांनी यावेळी सहाकाऱ्यांचा जीव वाचवून त्यांना बाहेर घेऊन आले. त्याकाळात पंजाबमध्ये हिंसाचार उफाळला होता मात्र पाकिस्तानपासून अवघ्या १८-२० किलोमीटर वर असलेले एक गाव मात्र शांत होते. घुमान त्या गावाचं नाव, तिथे गेल्यावर संजयजींच्या महाराष्ट्राची अस्मिता जागवणारा इतिहास त्यांच्या समोर आला. तिथल्या भेटवहीत आचार्य विनोबा भावे यांचे एक वाक्य होते- जो पंजाब सिकंदराला सैन्याच्या बळावर जिंकता आला नाही, तो नामदेवांनी प्रेमाने जिंकला. संत नामदेवांनी त्यांच्या आयुष्याचा उतरार्ध तिथे घालवला होता. त्या या गावाचं महत्व आणि नामदेवांचं जात-पात-धर्म-भाषा ओलांडून सर्वांना आपलंसं करण्याचं, माणुसकी जागृत करण्याचं कार्य संजयजींच्या लक्षात आलं. आणि घुमानसाठी काहीतरी चांगलं करण्याची आस त्यांना लागली. २०१५ साली ८८वं मराठी साहित्य संमेलन घुमानमध्ये घेण्यामागची संकल्पना संजय नहार आणि 'सरहद' यांची होती आणि अंमलबजावणी करणारे भारत देसडला होते. अर्थात, तत्कालीन पंजाब शासनासह इतर अनेक व्यक्ती आणि संस्था त्यांच्या पाठीशी उभ्या राहिल्यामुळे हे शक्य झालं. संमेलनाची फलश्रुती म्हणून तिथे एक कॉलेज उभं राहिलं आणि रेल्वे येण्याची पूर्वतयारी सुरू झाली, आणि आता संत नामदेव महाराष्ट्र भवनचे कामही तेथे सुरू झाले आहे. असे असले तरी संजयच्या कार्याचे कौतुक जसे होत

होते, तसेच त्यांचे शत्रूही निर्माण झाले होते.

एकदा पंजाबहून येताना या सर्वांनी मोठ्या प्रमाणावर शस्त्रं आणल्याची 'खबर' देऊन त्यांच्यामागे पोलिसांचा ससेमिरा लावून दिला. असे कितीतरी अनुभव संजय नहार यांच्याकडे जमा झाले. एकदा तर पंजाबहून पंजाबी मध्ये लिहिलेलं एक पोस्टकार्ड त्यांच्या नावे आलं. त्यात त्यांना जिवे मारण्याची धमकी होती. त्यामुळे पुणे पोलिसांनी त्यांना वर्षभर संरक्षण दिलं. अखेर नहारांनी स्वतःच ते काढून घेण्याची विनंती केली.

१९९० च्या सुमारास पंजाब शांत झाला, पण काश्मीर मध्ये दहशतवादानं डोकं वर काढलं. दरम्यान संजय नहार यांचं त्यांच्या कॉलेजमधील मैत्रिणीशी-सुषमाशी विवाह झाला होता आणि त्यां पत्नीसह पहिल्यांदा काश्मीरचा दौरा केला, तिथलं भयावह वातावरण अनुभवलं आणि आपलं कार्य तिकडे सुरू करण्याचं ठरवलं. लग्न झालं, खर्च वाढला त्यामुळे छापखाना सुरू करून दिवाळी अंक, कॉलेज-कट्टासारखी नियतकालिकं इ. व्यवसाय करून चूल पेटती ठेवावी लागली. कागद कापणं, लेखन, मजकूर जुळवणं, मोठ्या लोकांच्या मुलाखती घेणं, त्यांना लिहिण्याची विनंती करणं आणि छपाईनंतर विक्री आणि वितरण अशी सगळीच कामं संजय नहार, त्यांच्या पत्नी सुषमा, मेव्हणा शैलेश आणि काही मित्र स्वतः करत असत. दिवाळीच्या सुमारास रात्रंदिवस हे काम चालत असे, पण त्याच वेळी पंजाब आणि काश्मीरमधलं कार्यही चालूच राहिलं. याच दरम्यान त्यांनी 'वंदे मातरम' बोरबरच काश्मीरमध्ये काम करण्यासाठी 'सरहद' ही संस्था स्थापन करून कामाची व्याप्ती वाढवण्याचा निर्णय घेतला.

आता काश्मीरमध्ये शांततायात्रा सुरू झाल्या, सामान्य नागरिकांशी संपर्क पुन्हा सुरू झाला. सुमारे दहा वर्षे काश्मीरमध्ये दहशतीचं सावट होतं आणि

दुर्दैवानं शेजारी देशाचा हस्तक्षेपही इथे सुरू झाला आणि इथलं वातावरण अधिकच भयावह होऊ लागलं. अशा वेळी खऱ्याखऱ्या समस्या, आदर्शवाद, धाकदपटशा, धार्मिक आवाहनं अशा विविध कारणांमुळे सामान्य काश्मिरी माणूस पुरता गोंधळून गेला होता.

देशाच्या शत्रूनं या परिस्थितीचा फायदा घेतला. काश्मीरमध्ये हिंसाचार आणि अशांतता वाढतच गेला. पिढ्यानपिढ्या एकत्र गुण्यागोविंदानं राहिलेल्या हिंदू पंडित समाजाला काश्मीर खोरं सोडावं लागण्याची परिस्थिती देशाच्या हितशत्रूंनी निर्माण केली आणि तसंही मुस्लिमबहुल असलेल्या काश्मीर खऱ्याचं जवळजवळ पूर्ण धुवीकरण करण्यात त्यांना यश आलं. मग लष्कराचा हस्तक्षेप अनिवार्य ठरला. काश्मीरमधलं वातावरण बिघडून गेलं. त्यातच शाळा, कॉलेजं, रुग्णालयं अशा मूलभूत गोष्टींच्या अभाव जाणवू लागला. या दहा वर्षांमध्ये काश्मिरी मुलांची एक संपूर्ण पिढी गोळीबार, बाँबस्फोट, लष्कराची करडी नजर, पोलिसांचा ससेमिरा अशा वातावरणात जन्मून मोठी होत होती. शाळा-कॉलेज वर्षातून सहा महिने बंद, पर्यटकांची संख्या रोडावल्यामुळे खायची भ्रांत अशी अत्यंत वाईट परिस्थिती निर्माण झाली. हे पाहून संजय नहार यांनी ठरवलं, हे टाळायचं असेल तर इथल्या मुलांना या वातावरणातून बाहेर काढायला हवं. त्यांना पुण्यासारख्या ठिकाणी नेऊन ठेवलं तर सुरक्षितता, शांतता मिळेल. त्या दृष्टीनं त्यांनी प्रयत्न सुरू केले, पण आधीच काश्मिरी आणि त्यातही बहुतांश मुस्लिम मुलं म्हटल्यावर इथल्या शाळांत फारसा प्रतिसाद मिळाला नाही. मग त्यांनी स्वतःच या मुलांसाठी शाळा सुरू करण्याचे ठरवले. त्यावेळचे जम्मू-काश्मीरचे मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहंमद सईद यांना ही कल्पना आवडली आणि त्यांनी आर्थिक बाजू सांभाळण्याची तयारी दर्शवली; पण कुठल्याही राजकीय पक्षाची वा

सत्तेत असलेल्या नेत्याची मदत घ्यायची, तर कालांतराने मूळ कार्य आणि मूळ भावना बाजूला पडण्याचा धोका होता, शिवाय सरकारी निधी स्वीकारण्यासाठी अनेक निर्बंध, अटी, कार्यपद्धतींच्या जंजाळात अडकणे हे सर्व टाळण्यासाठी संजयजींनी त्यांना नम्रपणे नकार देऊन त्यांनी पत्नीच्या मदतीने 'सरहद' शाळा सुरू केली.

यावेळी समाजातल्या विविध स्तरातल्या लोकांनी, काही राजकारणी नेत्यांनी वैयक्तिक पातळीवर त्यांना अॅड. अभय छाजेड, ईश्वरदास चोरडिया, विठ्ठल मणियार, संभाजीराव काकडे, रामकृष्ण मोरे, प्रतापराव पवार, डॉ. शिवाजीराव कदम यांसारख्या विविध क्षेत्रांतील लोकांनी आधार दिला. कुठल्याही बॅनर वा झेंड्याखाली न येता शाळा उभी राहिली. पहिल्या बॅचमध्ये १०५ काश्मिरी मुलं-मुली पुण्यात आली. त्यांची निवड करण्याकरता तिथले स्थानिक नेते, लष्करी अधिकारी अशांची मदत घेण्यात आली. कारण तिथल्या प्रत्येक आई-बापाला आपलं मूल दूर का असेना निदान सुरक्षित राहिल अशी इच्छा होती आणि तो विश्वास संजयजींनी त्यांना दिला. यामध्ये सर्वात लहान मुलगा अडीच वर्षांचा होता, मुलगी चार वर्षांची होती, तर सर्वात मोठा मुलगा आठ वर्षांचा. ही मुलं जम्मू, काश्मीर, लेह, कारगिल इथली ही सर्व हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध होती. यातली काही मुलं अतिरेक्यांनी मारलेल्या गरीब लोकांची होती, काही लष्करी जवानांची होती, तर काही अतिरेक्यांची देखील होती. आपापल्या आवडीच्या क्षेत्रामध्ये कारकीर्द घडवण्याचा वाव या मुलांना मिळायलाच हवा, या दुर्दैव इच्छेनं 'सरहद'चं काम सुरू झालं.

असे असले तरी या सगळ्यामुळे ही मुलं बावरून गेली होती. त्यांना फक्त काश्मिरी भाषा येत होती. काही मुलांना थोडंफार उर्दूमिश्रित हिंदी यायचं. पण

'सरहद' शाळेतले शिक्षकवर्ग, कर्मचारी आणि मुख्य म्हणजे संजय आणि सुषमा नहार यांनी त्यांना हळूहळू समजून घेतलं, समजावून सांगितलं आणि विश्वास दिला. या काळात, काही मुलांनी जुळवून घेतलं तर काहींनी बंडखोरी करत परत जाण्याची मागणी केली. त्यांना घरच्यासारखं वाटावं म्हणून नहारांनी एका मौलवींना बोलावून नमाज पढवून घ्यायला सुरुवात केली. थोड्या मोठ्या मुलांना स्थानिक मशिदींमध्ये जाण्याची सोय केली. मात्र तरीही मुस्लिम मुलांना का आणले म्हणून संजयजींना विरोध झाला. त्यांना देशद्रोही ठरवण्याचा प्रयत्न झाला; पण संजयजींनी त्यांचे कार्य चालू ठेवले. या गोष्टीला आता काही वर्षे झाली आहेत. ही मुलं २०-२२ वर्षांची झाली आहेत. फिजिओथेरेपी, लॉ, बी. ए., बी. कॉम. अशा विविध पदव्यांचं शिक्षण घेत आहेत. काश्मिरी बरोबरच हिंदी, मराठी आणि इंग्रजी भाषेत बोलतात. वर्षातून एकदा, उन्हाळ्याच्या सुटीतच फक्त ही मुलं आपापल्या घरी जातात. मुलांची संख्या वाढून आता १५० झाली आहे.

काश्मीरहून अनेक तरुण-तरुणी पदवी आणि पदव्युत्तर शिक्षणाकरता पुण्यामध्ये येत आहेत. काहीही अडचण आली की संजयजींकडे येतात आणि त्यांचा 'सरहद'शी तसा काही संबंध नसूनही ते त्यांना शक्य तेवढी मदत करतात. काश्मिरी मुलगा दिसला आणि काही छोटी-मोठी समस्या निर्माण झाली तर स्थानिक पोलीस देखील प्रथम नहारांशी चर्चा करतात. वर्षातून एकदा सुषमा नहार आवर्जून काश्मीरला या मुलांच्या घरी जातात, त्यांच्या कुटुंबियांना भेटतात. 'सरहद' आणि नहार दांपत्यामुळेच आज त्यांची मुलं अतिरेकी बनली नाहीत की हिंसाचाराला बळी पडली नाहीत, चांगलं शिक्षण घेत आहेत. 'सरहद' शाळा असलेल्या कात्रज भागातील चौकाला पुणे-काश्मीर मैत्री चौक असं नाव मिळालं. पुणे मनपा आणि श्रीनगर मनपा

यांच्यात मैत्रीकरण झाला आहे, तो भारतातील पहिला 'मैत्री करार' आहे.

पंजाब, काश्मीर इथलं कामं वाढलं होतं तरी ईशान्य भारत आता संजयजींना खुणावू लागला होता. १९८७ साली नहार यांनी प्रफुल्लकुमार महंत आणि अन्य आसामी विद्यार्थी नेत्यांना पुण्यात बोलावून लोकांनी तिथल्या प्रश्नांची माहिती घेतली होती. अनेक वर्षांनी बोडो प्रश्नावर बोडो विद्यार्थी नेत्यांना पुण्यात बोलावलं. आणि २०१५ साली ५ ते १६ वयोगटातील १८ बोडो मुलं पुण्यात येऊन दाखल झाली. त्यांना बोडोंच्या बोरोव्यतिरिक्त अन्य भाषा माहिती नाही. पुण्याला येताना पहिल्यांदा त्यांनी रेल्वे पाहिली. आइस्क्रीम खाल्लं. आणि विशेष म्हणजे इथल्या काश्मिरी मुला-मुलींनी त्यांना कामापुरतं मराठी, हिंदी आणि इंग्रजी शिकवलं. मणिपूरचे काही तरुण मुलं-मुली उच्च शिक्षणाकरता 'सरहद'मध्ये येऊन राहिले आहेत.

कात्रजमध्ये 'सरहद स्कूल कात्रज'ची निर्मिती झाली आणि नंतर त्या शाळेला या परिसरातून मोठा प्रतिसाद मिळाला. आणि 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' या जैन तत्त्वानुसार वागणाऱ्या संजय नहार यांनी हेच ब्रीदवाक्य शाळेसाठी सुरू केलं आणि तळजाई जवळील 'सरहद पब्लिक स्कूल' वापरलं. या शाळा म्हणजे संजय नहार यांचे 'ड्रीम प्रोजेक्ट' आहे. अर्थात त्यांचे सर्व कामच तसे आहे; पण ही शाळा पाहिल्यावर तिची भव्यता लक्षात येते. बारावी पर्यंत इंग्रजी शिक्षणा बरोबरच महाविद्यालयीन शिक्षणही येथे होऊ शकणार आहे. पुण्यात सर्वांत स्वस्त शिक्षण देणारी 'सरहद' ही संस्था आहे; पण त्यामुळे संजयजींना त्रास होतो आहे; पण नफा मिळवण्यासाठी किंवा स्व-उन्नतीसाठी त्यांनी कोणतेही कार्य केलेच नाही. नावासाठी तर नाहीच नाही. अनेक लोक देणगी देण्यास आले; पण त्यांची अट होती की 'नाव लावा' संजयजींनी नम्रपणे अशी

देणगी नाकारली; पण त्या व्यक्तींशी संबंध विविध कारणांमधून दृढ ठेवले. त्यांची कात्रज घाटात असलेली गुजरवाडीतील 'सरहद स्कूल गुजरवाडी' ही निवासी शाळा इथल्या डोंगर परिसरात राहणाऱ्या मुलांसाठी शैक्षणिक दुवा ठरली आहे. स्कूलबस मधून ही मुलं या शाळेत येतात. निसर्गाच्या सान्निध्यात आणि काश्मीर, आसाम मधील मुलांबरोबर मैत्री करून इथले शैक्षणिक जीवन आनंदाने खेळत स्वीकारतात. याबरोबरच काश्मीरमध्ये पाकिस्तान सीमेवर कपूवाडा जिल्ह्यात दर्दपोरा नावाच्या गावात 'सरहद पब्लिक स्कूल, दर्दपोरा' ही शाळा सुरू झाली. जगातील सर्वात मोठे पुस्तकांचे गाव- ज्याची दखल व्हाईस ऑफ अमेरिका आणि न्यूयॉर्क टाइम्ससह देशभरातील प्रमुख वृत्तपत्रांनी घेतली ते बांदीपुरा जिल्ह्यातील आरागाम हे गाव हे सुद्धा 'सरहद'चीच कल्पना आहे.

त्यांच्या पुण्यातील तीनही शाळा नावारूपाला आल्या आहेत. हे खरोखरच एक चॅलेंज होते; पण त्यांनी ते स्वीकारले आहे. खर्चाची तोंडमिळवणी करता करता खरोखरच काही वेळा अनेक वार्ड प्रसंगांना सामोरे जावे लागले; पण तरीही आजही अगदी स्थानिक मुलांना प्रवेश देतांना त्यांच्या आर्थिक परिस्थितीचा विचार केला जातो आहे. इतर शाळांपेक्षा फी कमी, दर्जेदार शिक्षण व्यवस्था आणि पालकांशी असलेला ऋणानुबंध यामुळे तीनही शाळांचे पुण्यातील स्थान अव्वल आहे. 'चिनार पब्लिशर्स'च्या माध्यमातून मोठ्या लोकांची चरित्रं, वेगळ्या पण जोडणाऱ्या, देशाशी संबंधित विषयांवरची पुस्तकं पदराला खार लावून प्रकाशित करणं. असे अनेक उपक्रम त्यांचे आजही चालूच आहेत. त्याचबरोबर टीकाकार, विरोधक यांच्याशी त्यांचा संवादसुद्धा आजही सुरूच आहे.

संजयजींचं कार्य हे लाख मोलाचं आहे. कोट्यवधीची संपत्ती गोळा करणं कधी कधी सहज

शक्य होत असतं; पण हातात काहीही नसताना त्यांनी हा देशहिताचा वेगळा संसार पुण्याच्या इतिहासात नोंदवला आहे. पंजाब, काश्मीर, आसाम मध्ये दहशतवाद रुजला, फोफावला अशा धगधगत्या वातावरणातील मुलांचे नहार पती-पत्नी आई-बाप झाले. त्यांच्या शिक्षणाची, आरोग्याची आणि एकूणच भवितव्याची जबाबदारी घेत त्यांनी पालकत्वाची एक नवी ओळख जगाला करून दिली. पैशांची हाव नाही, अनेक वेळा उसनवारी झाली, त्यातून घरावर जप्ती येण्यासारखे प्रकारही घडले; पण कोणापुढे हात न पसरता हा सगळा प्रपंच त्यांनी नेकीने सांभाळला आहे. देणगीदार येतात 'नावासाठी'; पण 'कार्या'साठी नाही, हे त्यांनी ओळखले होते आणि म्हणून अशांना त्यांनी दूर ठेवले.

संजयजींच्या कार्याला सीमा नाही. पंजाबमध्ये मराठी साहित्य संमेलन, पुण्यामध्ये विश्व पंजाबी संमेलन, घुमानमध्ये देशाच्या विविध भाषांमधल्या साहित्यिकांचं बहुभाषा संमेलन, पुण्यामध्ये दरवर्षी काश्मीर सायकलफेरी, कारगिलमध्ये मॅरथॉन शर्यत, संत नामदेवांच्या घुमानमध्ये पदवी महाविद्यालय अशा अनेक गोष्टींमधून त्यांनी त्यांचं अस्तित्व सिद्ध केलं. २०१४ मध्ये भारतात सरकार बदललं; पण या मोदी सरकारनं देखील त्यांच्या कामाची, 'सरहद'ची दखल घेतली आहे.

प्रासिकर खाते, पोलीस खाते, धर्मादाय संस्था खाते, शाळा खाते अशा विविध खात्यांकडे खोट्या तक्रारी करून चौकशां मध्ये त्यांना गुंतवण्याचे प्रकारही अधून-मधून होत राहतात. पण संजय नहार अजून टिकून आहेत. कारण समाजात चांगल्या प्रवृत्तीही असतात आणि त्या वेळेला योग्य मदत करतात यावर त्यांचा विश्वास आहे. संजयजींचं जीवन विलक्षण अनुभवांनी भरलेलं आहे. हे कार्य करीत असताना तीन वेळा त्यांच्यावर प्राणघातक हल्ला होण्याचा प्रयत्न

झाला. एका बॉम्बस्फोटात तर दोन जण गंभीर जखमी झाले; पण ते त्यातून वाचले. काश्मिरात सरकारचा हस्तक तर पुण्या-मुंबईत 'आयएसआय'चा हस्तक असं दोन्ही म्हणवून घेतलं; पण पाकिस्तानला जाऊन भारताचा अभिमान आणि सन्मान व्यक्त करून तिथल्या युवकांच्या टाळ्या मिळवल्या आहेत. देशाची प्रतिमा जगभर उजळवण्याच्या कार्यात 'सरहद'चे काम सुशीकुमार शिंदे यांनी महत्त्वाची भूमिका बजावली.

यात बाळासाहेब ठाकरेंकडून कौतुक झालं आहे. कुठल्याही पक्षाचे नसून सर्व पक्षांचे नेते त्यांना व्यक्तिशः ओळखतात. पंजाबमधली साहित्य अकादमी असो, ईशान्येतल्या ऑल इंडिया बोडो स्टुडंट्स युनियन (आबस्सू) चे प्रमुख नेते प्रमोद बोरो, मणिपूरमधले जीवनसिंग, जेसुसेन सारखे कार्यकर्ते, आसामचे माजी मुख्यमंत्री प्रफुल्लकुमार महंतो, काश्मीरचे राज्यपाल, मुख्यमंत्री, एवढंच नव्हे तर फुटीरतावादी हुर्रियत नेते यासीन मलिक, शब्बीर शाह, गिलानी, गुलाम नबी आझाद आणि गुलजारजीचे या सर्वांचे स्थान संजयजींच्या जीवनात महत्त्वाचे आहे.

'सरहद'चे काम तर चालूच आहे; या कामाने आता शिखर गाठले आहे; पण आता संजयजींने एक नवीन कार्य हाती घेतले आहे. जैन समाजाचा इतिहास, ग्रंथ, आगम आणि प्राकृत भाषेचे अधिष्ठान एकाच छताखाली आणून संशोधकांना त्याचा उपयोग कसा होईल, या दृष्टीने त्यांचे कार्य सुरू झाले. जैनांचा इतिहास इ. स. पूर्व काळापासूनचा आहे; पण तो अर्धमागधी, प्राकृतात आहे. सहज सोप्या भाषांमध्ये तो इतिहास जैन आणि जैनेतर समाजापर्यंत पोहोचवण्याचा त्यांचा मानस आहे. यासाठीच २०२६ च्या दरम्यान ते पाली-प्राकृत भाषेचे जागतिक संमेलन घेण्याची तयारी सुरू झालेली आहे. या सर्व कामात

डॉ. शैलेश पगारिया, नीलेश नवलाखा, इंद्रकुमार छाजेड, अतुल जैन, अनुज नहार, सुयोग गुंदेचा, शैलेश वाडेकर, मयूर मसुरकर, हेमंत जाधव, आबा पासलकर अशी एक चांगली टीम या कामात त्यांच्या बरोबर आहे.

आजवर संजयजींना या कार्यासाठी अनेक पुरस्कार मिळाले आहेत. त्यामध्ये पुणेज् प्राईड ॲवॉर्ड, धर्मवीर संभाजी ॲवॉर्ड, अण्णा हजारे लाईफ टाइम अचिव्हमेंट ॲवॉर्ड, सूर्यदत्ता नॅशनल ॲवॉर्ड, स्व. नेमगोंडा दादा पाटील ॲवॉर्ड, जैनम ॲवॉर्ड, केसरी गौरव सन्मान २०१०, बा-बापू ॲवॉर्ड, गुरुनानक शिरोमणी ॲवॉर्ड, एबीपी माझा सन्मान पुरस्कार २०१३, स्वामी विवेकानंद गौरव पुरस्कार २०१३, समाज रत्न पुरस्कार, महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे ॲवॉर्ड, मातृभाषा पंजाब सेवा पुरस्कार, कर्तृत्व गौरव पुरस्कार, ॲवॉर्ड फॉर एक्सलन्स (सोशल सर्व्हिस) जितो २०२२ अशा अनेक पुरस्कारांनी संजयजींना गौरवण्यात आले आहे.

'वंदे मातरम' आणि 'सरहद' संजयजींचा 'आत्मा' आहे. जैन तत्त्वज्ञानी शैली त्यांनी अंगीकारली आहे. राजकारण, अर्थकारण यांच्या चक्रात न सापडता संजयजींनी एक वेगळं अस्त्वि निर्माण केलं आहे. देवभूमी काश्मीरमधील मुलांचे पालकत्व स्वीकारताना त्यांच्यातील धर्म, जात, प्रांत यांच्या पलिकडे जाऊन माणुसकी जगण्याची आणि जपण्याची कळकळ दिसून येते.

